ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

तिथि–10 जनवरी 2020
सृष्टि संवत्- १, ९६, ०८, ५३, १२०
युगाब्द-५१२०, अंक-१२२, वर्ष-१३
पौष विक्रमी २०७६ (जनवरी 2020)
मुख्य संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य'
कार्यकारी संपादक : आचार्य सतीश
सम्पर्क सूत्र: 9350945482
Web: www.aryanirmatrisabha.com
E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com

ऋषि दयानन्द

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

गयस्फानो अमीवहा वसुवित्पुष्टिवर्धनः । सुमित्रः सोम नो भव ॥ –ऋ० १। ६। २१। २

व्याख्यान–हे परमात्मभक्त जीवो! अपना इष्ट जो परमेश्वर सो (गयस्फानः) प्रजा, धन, जनपद और स्वराज्य बढ़ानेवाला है। तथा (अमीवहा) शरीर-इन्द्रियजन्य और मानस रोगों का हनन (विनाश) करनेवाला है। (वसुवित्) सब पृथिव्यादि वसुओं का जाननेवाला है, अर्थात् सर्वज्ञ और विद्यादि धन का दाता है। (पुष्टिवर्धनः) अपने शरीर, इन्द्रिय, मन और आत्मा की पुष्टि का बढ़ानेवाला है। (सुमित्रः सोम नो भव) सुष्ठु यथावत् सबका परम मित्र वही है। सो अपने उससे यह मांगें कि, हे सोम सर्वजगदुत्पादक! आप ही कृपा करके सुमित्र हों, और हम भी सब जीवों के मित्र हों, तथा अत्यन्त मित्रता आप से ही रक्खें ॥

सम्पादकीय

महाराष्ट्र में आर्य निर्माण प्रवास और हमारा संकल्प

महाराष्ट्र हिन्दी भाषी प्रान्तों के साथ एक ऐसा प्रान्त है जिसके निवासी प्रायः राष्ट्रवादी विचारधारा के रहे हैं, कुछ छोटी मानसिकता के लोगों ने अवश्य ही इन उदारमना लोगों के भीतर संकीर्ण सोच के बीज बोने का पूर्ण प्रयत्न किया, किन्तु फिर भी वे तमिलनाडु के नास्तिक नेताओं की तरह महाराष्ट्र के निवासियों के भीतर संकीर्ण मानसिकता को उतना नहीं बैठा पाये। मैं इसका प्रमुख कारण मानता हूं महाराष्ट्र की मराठी भाषा को जिसकी लिपि देवनागरी है। मैं अनेक बार यह सोचकर अभिभूत होता ही रहता हूं कि जब से मराठी भाषा बनी तब से अब तक के महाराष्ट्र वासियों का जितना भी अभिनन्दन किया जाय कम ही है, जिन्होंने अपनी मराठी भाषा की लिपि में किसी प्रकार की मोड़-तोड़ नहीं की। जब कि राजस्थान से सटे गुजरात निवासी लोग यह विशाल दृष्टिकोण नहीं अपना पाये और अपनी गुजराती भाषा की लिपि में थोड़ा सा घुमावदार आकार बना ही डाला। अतः महाराष्ट्र के साहित्यकारों का अभिनन्दन करना ही चाहिए।

सम्प्रति हम लोग मैं और आचार्य अश्विनी जी (मुजफ्फरनगर, उ.प्र.) दिनांक-२० दिसम्बर को दिल्ली से महाराष्ट्र के लिए निकले। हमें आर्य नरेश (छिकारा) एवं अन्तर्राष्ट्रीय हाकी खिलाड़ी श्री भारत छिकारा हवाई अड्डे पर छोड़ने आए, वहां से हैदराबाद पहुंचे, वहां पर श्रीयुत् विद्यासागर एवं श्रीमती धनश्री दम्पत्ति ने हमें अपने घर पर भोजनादि करवाया, तदुपरान्त हम महाराष्ट्र एस.टी.बस से निलंगा, जि.लातूर, महाराष्ट्र रात्रि ८ बजे पहुंचे। वहां हमारे महाराष्ट्र 'आर्य निर्माण' के सूत्रधार श्री विजय कुमार कानाडे, श्री ओमप्रकाश वाघमारे एवं श्री ओमप्रकाश आर्य जी आदि आर्य जन उपस्थित मिले। दिनांक २१ एवं २२ दिसम्बर को हमने यहां का 'आर्य प्रशिक्षण सत्र' पूर्ण कर उसी रात्रि को प्रस्थान किया, सोलापुर तक श्री ओमप्रकाश आर्य हमें अपनी कार से छोड़ने आए, निलंगा में हम इन्हीं के घर पर पारिवारिक वातावरण में दो रात्रि रुके थे। सोलापुर से हम रेल से ११ बजे रात्रि को कोल्हापुर के लिए चले और प्रातः ५ बजे पहुंचे, श्रीमान कानाडे हमारे साथ रहे। २३ दिसम्बर को हमारा विश्राम का दिन था किन्तु अवकाश के दिन पन्हाला का छत्रपति शिवाजी महाराज का किला देखने में व्यस्त रहे। यह किला कोल्हापुर से २० किमी दूर पहाड़ी पर स्थित है, बहुत ही सुन्दर, मनोहर, सघन वृक्षों, औषधियों-वनस्पतियों से आच्छादित यहां पर हमारे महाराष्ट्र के चारों सत्रों के सूत्रधार श्री विजय कुमार कानाडे जी के तीसरे पुत्र श्री विवेक कानाडे जी का निवास है, वे इस स्थान पर अपनी देवी श्रीमती याज्ञिका एवं दो छोटे बच्चों के साथ रहते हैं, दोनों अध्यापन कार्य करते हैं। मध्याह्न भोजन के उपरान्त इचलकरंजी, कोल्हापुर के लिए श्री कानाडे जी के साथ निकले, सायंकाल ५ बजे के लगभग हम यहां पहुंचे, सत्रस्थल देखने के उपरान्त विश्राम किया। यहां हमारे निवास और भोजनादि की व्यवस्था सिन्ध के वाधवानी परिवार ने सम्भाली, इन्हीं के छोटे बालकों ने कृष्णा गुरुकुल में सत्र का आयोजन किया गया था, बहुत ही श्रद्धा और सत्कार का वातावरण मिला। इचलकरंजी का सत्र महिला प्रधान सत्र रहा, फिर भी भविष्य की आशा जग रही है। २६ दिसम्बर को हम लोग इचलकरंजी से अमावस्या का यज्ञ करके कुछ लोगों से मिलते हुए श्री दिनेश वाधवानी के साथ उनके वाहन से कोल्हापुर पहुंचे, विश्रामादि श्री विवेक जी के निवास पर रहा। मैंने इन दो दिनों में अपने विद्यार्थी जीवन के परिवार जोगलेकर परिवार के लोगों से भेंट की। २७ दिसम्बर को दोपहर १ बजे हम कोल्हापुर (महाराष्ट्र एस.टी.बस) से पिंपरी-पुणे पहुंचे। आर्य समाज-पिंपरी में श्री कानाडे जी अपने घर से पहुंच चुके थे,

शेष अगले पृष्ठ पर

संपादकीय का शेष...

श्री उत्तम दंडिमे जी के साथ मन्त्री श्री धर्मानी जी और अन्य आर्य जन उपस्थित थे। सभी ने सौहार्द पूर्ण रीति से स्वागतादि कर प्रस्थान किया और हमने सन्ध्या और भोजनादि कर सत्र के लिए निर्धारित हाल का निरीक्षण किया। कुछ व्यवस्था सम्बन्धी संशोधन करवाए। २८ एवं २६ दिसम्बर पुणे (महाराष्ट्र) के इस सत्र सहित पंचकूला, कैथल (हरियाणा), देहरादून (उत्तराखंड) में महिला एवं पुरुष दो सत्र, अजमेर (राजस्थान), एवं कवर्धा (छत्तीसगढ़) कुल सात सत्रों का आयोजन हुआ। यहां पर सत्र अच्छा रहा, आयोजकों ने जब सम्पूर्ण पाठ्यक्रम सुना और जाना, तब वे सभी प्रमुदित हो गए और शीघ्र ही बड़े स्तर पर सत्र आयोजित करने का आश्वासन दिया। ३० दिसम्बर को हमने ऋषि दयानंद जी से जुड़े कुछ भिड़ेवाड़ा आदि स्मृतिस्थलों को देखा और रात्रि को ट्रैवल्स से औरंगाबाद के लिए प्रस्थान किया। दो आर्य जन हमें छोड़ने आए और बार-बार जाने का आग्रह करने पर भी ११ बजे रात्रि बस में बिठाकर ही गए। ३१ दिसम्बर की प्रातः हम औरंगाबाद (साम्भाजी नगर) पहुंचे। डा. सुजाता जी अपनी पुत्री के साथ हमें लेने आयीं थी । यहां पर निवासादि की व्यवस्था श्रीमान सुभाष वेदपाठक जी के घर पर हुई। यहां का सत्र भी व्यवस्थित और सफल रहा। महाराष्ट्र के सभी चारों सत्रों में सुशिक्षित, सभ्य और सुपठित लोग मिले, कुछ आर्य समाज से परिचित थे, कुछ का न्यून ही परिचय था और कुछ सर्वथा अपरिचित भी थे। व्यसन न्यून ही मिले ।

इस पूरे प्रवास में एक हृदय को उत्पीड़ित करने वाला समाचार कोल्हापुर में यह मिला कि-छत्रपति शाहूजी महाराज ने जो स्थान एवं संस्थान आर्य समाज को आर्यों की बढ़ती के लिए दिए थे, वे सब स्वघोषित आर्य महाशयों के कृपाकटाक्ष से आर्य सिद्धांत और आर्य वर्चस्व से विहीन होकर 'आर्य प्रतिनिधि सभा' को मुंह चिढ़ा रहे हैं, किन्तु कोई कुछ नहीं कर पा रहा है। शाहूजी महाराज स्वतंत्रता से पूर्व सम्भवतः एकमात्र ऐसे राजा थे जिन्होंने अपने राज्य में कर्मचारियों और अधिकारियों की नियुक्ति के लिए 'सत्त्यार्थ प्रकाश' को अन्य विषयों के साथ अनिवार्य किया था ।जिसकी राजाज्ञा अभी भी उपलब्ध है। किन्तु आर्य समाज के लेखकों से भिन्न लेखकों ने इन महत्वपूर्ण बातों का उल्लेख अपनी पुस्तकों में नहीं किया और करता भी कौन है ? जो संगठन षड़यंत्रकारियों का भक्ष्य होकर निर्बल एवं असहाय हो जाय उसके गौरवगीत भला कौन गाएगा ?

पुनरपि हम अपने दृढ़ और दुर्धर्ष आर्यों के बल पर संकल्प ले ही आए हैं कि हम छत्रपति शाहूजी महाराज की आकांक्षा को पूरा करेंगे ।हम कोल्हापुर में 'आर्य निर्माण' करेंगे । अतः जो भी आर्यगण भविष्य में हरियाणा-दिल्ली से शरीर की अभिवृद्धि के लिए कोल्हापुर आएंगे उन्हें यहां कर(टैक्स) देना पड़ेगा और वह कर होगा कम से कम दश व्यक्तियों को आर्य बनने के लिए तैयार करना, जिसका सामर्थ्य न हो वह कदापि कोल्हापुर जाने की न सोचे ।

आज ३ जनवरी को मध्याह्न १ बजे हम सचखण्ड ऐक्सप्रेस से दिल्ली के लिए चल पड़े हैं, दिल्ली में शीतलहर के समाचारों से कुछ भय तो लग रहा है,क्योंकि महाराष्ट्र में वसन्तऋतु जैसे वातावरण का आनंद बना हुआ है । 'आर्य निर्मात्री सभा' के द्वारा महाराष्ट्र में १५ दिनों (२० दिसम्बर से ०३ जनवरी) में चार सत्रों को सम्पन्न होने से एक प्रयोग यह तो सफल हो गया कि- सुदूरवर्ती प्रान्तों में पन्द्रह बीस दिन के लिए एक साथ प्रवास पर निकल कर दो आचार्य चार-पांच सत्र सम्पन्न करके लौट सकते हैं, इससे लम्बी भागदौड़ से बचकर और सहज सम्पर्क बना कर ऋषि अभिप्रेत परम पुण्य कार्य करने में सफलता मिल सकती है। आइए तैयार हो जाएं ।।

संध्योपासना का महत्त्व

- आर्य दीपक विद्यार्थी

इस लेख में मेरे जैसे युवकों के जीवन की समस्याओं के समाधान को सैद्धांतिक रूप से हमने रखा है, जिसमें मैंने वर्तमान हो रही घटनाओं से बचने के लिए अपने मन्तव्य को रखा है।

मेरे लेख व आचरण मे जो भी सैद्धांतिक व अच्छा, सभ्यतायुक्त कर्म व्यवहार है, वह सब ईश्वर की कृपा, स्वतंत्रता के प्रथम उदघोषक ऋषि दयानंद के ग्रंथ व मेरे आचार्य द्वारा दी गयी विद्या आशीर्वाद व अन्य आर्यों के प्रेरणा सहयोग आशीर्वाद के कारण ही है। लेख में व्याकरण व असैद्धांतिकता मेरी अविद्या ही होगी। आचरण, व्यवहार में त्रुटि भी मेरी ही है।

हम सब इसी समाज का हिस्सा है और समाज में हो रहे अच्छे-बुरे व्यवहार को देखते भी कई-कई बार, कहीं-कहीं उनकी आलोचना-समालोचना, पक्ष-विरोध आदि भी करतें हैं, लेकिन यदि हम निष्पक्ष होकर जानें तो सत्य असत्य को जान भी लेते हैं क्योंकि हम सबकी आत्मा सत्य-असत्य को जानने वाली है। इसी सिद्धांत को ऋषि ब्रह्मा से लेकर ऋषि दयानंद पर्यंत सभी ऋषि मुनियों व इनके बाद सैद्धांतिक वेदनिष्ठ आचार्यों विद्वानों ने बार-बार बताया कहा है लेकिन इतना सब होने के बाद अत्यंत स्वाध्यायशील विद्वान व्यक्ति भी समाज में हो रहे बुरे कृत्यों के आकर्षण, प्रभाव, वासनाओं, संस्कारों, सिद्धांतों के प्रभाव में आकर अपने मनमाने ढंग से चलने लग जाता है, उसी में रहकर अपने अमूल्य जीवन को नष्ट कर लेता है अन्यों की तो बात ही क्या करें।

भोले भाले मनुष्यों को तो यह कार्य सोशलमीडिया, मीडिया, सिनेमा जगत व अन्य प्रचार पत्राचार माध्यम श्रेयस्कर बताकर उनके सामने प्रस्तुत करते हैं वे इस रोग को महाऔषध मानकर ग्रहण करते जाते हैं। ऐसे में उपाय क्या है? समाज में लगभग ६६.५ व्रतिशत इसी भयानक रोग से ग्रसित हैं, तो उनको बचाने का केवल एक ही मार्ग है और वह ईश्वरीय मार्ग, धर्म मार्ग अर्थात् वेद मार्ग, आर्य मार्ग ही है।

इस महान मार्ग पर चलने का प्रथम पग है आर्य विद्या को जानकर ईश्वर संध्योपासना को एकाग्रता पूर्वक ठीक ठीक ढंग से करना फिर देखना यदि आप लोक व्यवहारिक जीवन से प्रभावित होकर किसी भी बुरें कृत्यों, आकर्षण, प्रभाव, बहकावे, वासनाओं, संस्कारों, सिद्धांतों या आपके दबे कुसंस्कार की जागृति के कारण उन पर चलने भी लगते हो, लेकिन यदि आपने थोडे से भी समयावधिकाल के लिए एकाग्रता व ठीक ठीक विधिपूर्वक संध्योपासना के सर्वोत्तम महान कार्य को करते हैं तो यह कार्य आपको उस पर अधिक लम्बे देर तक को चलने ही नहीं देगा। आपके विनाश से पहले ही आपको वेदमार्ग-आर्य की ओर कर देगा और आप जब-जब भी उस कार्य के प्रभाव, आकर्षण, संस्कार, वासना, सिद्धांत के निकट में जाओगे तो ये आपको ऐसे वेद-विद्या के सिद्धांतों के नोकदार शस्त्रों से आपके मानसिक पटल पर प्रहार करेंगे कि आपके स्वयंकल्याण के लिए ये वेद-विद्या के सिद्धांतों के प्रहार आपका उसी भांति संरक्षण करेंगे, जिस प्रकार एक आचार्य अपने शिष्य के श्रेष्ठ भविष्य के लिए विद्या देने के साथ साथ उसे धमकाता भी है, दण्ड भी देता है लेकिन वह आचार्य तो निष्पक्ष होकर अपने शिष्य का कल्याण, वृद्धि ही चाहता है। इसीलिए वह उसका संरक्षण, संवर्धन करता है, उसे सैद्धांतिक बनाकर समाज के लिए महान उपकार का कार्य करता है।

इसीलिए एक आचार्य की भांति संध्योपासना का कर्म भी हमें सब प्रकार के बुरे आकर्षण, प्रभाव, वासनाओं, संस्कारों, सिद्धांतों से छुडाकर वेदानुकूल जीवन जीने के लिए प्रेरित करता है। आपको ऐसी चट्टानस्तंभ बनाकर खडा करता है कि फिर आपके जीवन में ये बुरे कृत्यों, आकर्षण, प्रभाव, बहकाव, वासना, संस्कार, सिद्धांत यदि आयेंगे भी तो आपको हिला भी नहीं पायेंगे, आप को टस से मस भी नहीं कर सकतें हैं।

यह ईश्वर संध्योपासना वेदानुकूल नियम, सिद्धांत, पद्धति, आदि सब ईश्वर की न्यायव्यवस्था में रहकर सर्वदा सर्वव्यापक ईश्वर को अपने साथ जानकर उसी की आज्ञा के अनुसार चलने चलाने की ओर ही निर्देश करतें हैं।

इसलिए मेरा सभी से निवेदन है कि वे ईश्वर संध्योपासना को अपने जीवन मे स्थापित कर अन्यों को संध्योपासना की महत्ता व संध्योपासना करने के लिए भी प्रेरित करें। संध्योपासना करने का अर्थ आपके जीवन में वेद-विद्या के प्रति निष्ठा, उसके सिद्धांतों के अनुसार आचरण, अष्टांगयोग का परिपालन, ईश्वर की प्राप्ति की ओर गति मे वृद्धि। आप नित्य प्रतिदिन प्रातःकाल सांयकाल संध्योपासना के संकल्पित जीवन को जीना आरम्भ तो करिये बाकी के सारे श्रेष्ठ संकल्प आपके जीवन में स्वतः घटित हो जायेंगे। ईश्वर की संध्योपासना करने वालों का संकल्प बल उत्तरोत्तर बढता ही जाता है। संध्योपासना करना यानि ईश्वर का संग करना। यही तो आर्य महासंघ की तीव्र आकांक्षा है कि पुनः सब मनुष्य पूर्व की भांति संध्योपासना करने लग जायें। संसार मे सुख बढें ।

विश्वविद्यालयों में अराजकता

- आचार्य सतीश

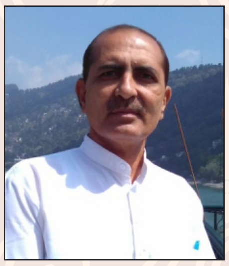

देश की राजधानी में १००० एकड़ से अधिक में फैला एक विशिष्ट शिक्षण संस्थान जिसकी स्थापना तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने अपने एक निकट सहयोगी सैयद नूर उल हसन के सहयोग से १९६९ में की जो कि देश का सबसे प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय माना जाता रहा है, क्योंकि सत्ता में बैठे लोगों के द्वारा उसे ऐसा मनवाया गया है भले ही उसकी उपलब्धि उस स्तर की नहीं रही हो। देश में अधिकांश लोग ऐसा ही मानने पर विवश हैं और ऐसा ही सोचते भी हैं। सैयद नूर उल हसन जो पूर्णतया वामपंथी विचार के शिक्षा विद थे उन्होंने प्रारंभ से ही इसको एक वाम विचारों का पोषक संस्थान बनाया और अपने शिक्षा मंत्रीत्व काल में इसे और बढ़ाया भी। प्रारंभ से ही इसमें नियुक्तियां उन अध्यापकों की की गई जो वामपंथी विचार से सहमत थे या उसको बढ़ाने के लिए संकल्पित थे। इस विश्वविद्यालय का इतना अधिक वामपंथी करण कर दिया गया कि अपनी स्थापना के ५ वर्षों बाद ही इसमें समस्याएं उत्पन्न होने लगी और यह अव्यवस्था का शिकार हो गया। इतने अधिक संसाधन इसमें लगाए गए कि जहां अन्य किसी विश्वविद्यालय में ५ वर्ष में ढांचा तैयार नहीं होता वही यह सरकार के लिए सिरदर्द बन गया। अपनी स्थापना के १२ वर्ष में ही जेएनयू को १६ नवंबर १९८० से ३ जनवरी १९८१ तक ४५ दिन के लिए इसमें घटित घटनाओं के कारण बंद करना पड़ा। संसाधनों का दुरुपयोग इस प्रकार से यहाँ होता है कि यहां के छात्रों व शिक्षकों को वे सुविधाएं और वरीयता प्राप्त होती है जिसकी अन्य कोई कल्पना भी नहीं कर सकता और वह भी पूर्णतया निशुल्क। सामाजिक पिछड़ापन क्षेत्र के नाम पर बनी प्रवेश नीति में योग्यता का कोई आधार नहीं होता और योग्यता का आधार नहीं तो अंतिम परिणाम क्या होगा उसका विश्लेषण तो अलग से ही किया जा सकता है।

५० वर्षों की स्थापना के बाद देश की संपत्ति स्वाहा करने के पश्चात अगर देश के सबसे प्रतिष्ठित और अग्रणी शिक्षा संस्थान की यह स्थिति है तो फिर अन्य विश्वविद्यालयों को कैसा मार्गदर्शन मिलेगा इसकी सहज ही कल्पना की जा सकती है। इस विश्वविद्यालय की यह हालत करने का श्रेय पूरी तरह से इसमें प्रारंभ से ही वर्चस्व स्थापित करने वाले वामपंथियों को जाता है जिनका उद्देश्य केवल अपने मार्क्सवादी विचारों का प्रसार ही एकमात्र उद्देश्य है और उन्होंने इसका प्रयोग एक राजनीतिक हथियार के रूप में किया है। इसी कारण इसको देश का सर्वोच्च विश्वविद्यालय होने का भ्रम लोगों में बनाए रखा है जबकि वास्तविकता इसके विपरीत है। इसी की देखा-देखी देश के अनेक विश्वविद्यालयों में इसी तर्ज पर घटनाएं घटी, शिक्षा का वातावरण बिगड़ा, बार-बार विरोध हड़ताल, बहिष्कार जैसी बातें शिक्षण संस्थाओं में होती रही जो कि किसी देश की शिक्षा को चौपट करने के लिए पर्याप्त है। आज देश के अनेक विश्वविद्यालयों में यह बीमारी फैल चुकी है चाहे वह अलीगढ़ हो, जामिया हो,जादवपुर हो हैदराबाद हो या अन्य कोई और विश्वविद्यालय। किसी राष्ट्र में उच्च शिक्षा का कार्य गंभीर वातावरण में होता है देश के विकास में उच्च शिक्षा का योगदान ही सबसे महत्वपूर्ण होता है। लेकिन वामपंथियों ने देश के उच्च शिक्षा संस्थानों का प्रयोग केवल अपनी राजनैतिक महत्वाकांक्षाओं के लिए किया और देश के बौद्धिक चिंतन को कुंद कर दिया। जो हमारी ज्ञान परंपरा वेद, उपनिषदों, दर्शनों, गीता आदि से होते हुए वराह मिहिर,आर्यभट्ट, चरक आदि वैज्ञानिकों तक पहुंची उसे पूरी तरह से नकार दिया गया और उन ज्ञान ग्रंथों को ही सांप्रदायिक घोषित कर दिया गया।

उच्च शिक्षण संस्थाओं का कार्य देश की ज्ञान परंपराओं को बढ़ाना होता है, उनको समृद्ध बनाना होता है, ऐसे शोधार्थी तैयार करना होता है जो देश के हर क्षेत्र में मानदंड स्थापित करें, न कि शिक्षण संस्थाओं को ही बंधक बनाकर हिंसक वातावरण बनाकर सड़क पर आंदोलन करते फिरें। इस प्रकार के शोर-शराबे के आंदोलन का कार्य राजनैतिक पार्टियों व सामाजिक संगठनों का होता है न कि बौद्धिक विमर्श पैदा करनेवाले शिक्षण संस्थाओं का। जिनको इस प्रकार का आंदोलन करना होवे शिक्षण संस्थाओं से बाहर आएं, उन्हें छोड़ें, वहाँ दूसरे को शिक्षा प्राप्त करने दें और स्वयं आंदोलन करें। उच्च शिक्षा तो इस प्रकार शोध कार्य के लिए है जिससे किसी देश के हर क्षेत्र को एक नई दिशा मिले चाहे वह विज्ञान चिकित्सा, राजनीति, अध्यात्म, लोक कल्याण, व्यवसाय, अर्थव्यवस्था या अन्य कोई क्षेत्र हो। लेकिन जब इन विश्वविद्यालयों में हर छोटे बड़े मुद्दे पर छात्रों का राजनीतिक दलों द्वारा प्रयोग करना शुरू कर दिया जाता है तो वहां शोध कार्य नहीं अपितु कोलाहल ही होता है। सबसे ज्यादा कोलाहल आज तक जेएनयू में रहा है, इसी का परिणाम है कि वहां पर आज तक कोई ऐसा शोध कार्य नहीं हुआ है जो उल्लेखनीय हो और यह संक्रमण की तरह अनेक विश्वविद्यालयों में फैला है यहां तक कि शांति निकेतन जैसा विश्वविद्यालय भी इसकी चपेट में है।

तो आवश्यकता इस अव्यवस्था को समाप्त करने की है इस अराजकता व अव्यवस्था को समाप्त करने का सबसे अच्छा तरीका तो यह है कि वहां कोलाहल को समाप्त किया जाए। किसी भी ऐसे विषय पर छात्रों को आंदोलन प्रदर्शन,धरने, कक्षाओं के बहिष्कार की अनुमति नहीं होनी चाहिए जो सीधा उनसे न जुड़ा हो, उनकी शिक्षा से न जुड़ा हो। देश के कानूनी, सामाजिक, राजनीतिक विषयों पर आंदोलन से संबंधित संगठनों का कार्य है ना कि छात्रों व अध्यापकों का। राजनीति से शिक्षण संस्थाओं को दूर करने का उपाय है वहां पर किसी भी प्रकार के राजनीतिक दलों से संबंधित संगठनों के चुनाव बंद हो तथा छात्र प्रतिनिधियों का कार्य केवल शिक्षा से संबंधित विषयों पर चर्चा का हो। शिक्षा पूरी करके समाज में जाकर उन्हें हर प्रकार के कार्य करने की छूट प्राप्त हो ही जाएगी। अपने ही देश में ही नहीं संसार भर के उच्च कोटि के शिक्षण संस्थाओं में चुनाव कि इस प्रकार की व्यवस्था नहीं है जैसी हमारे देश के अनेक विश्वविद्यालयों में है। हां जहां इस प्रकार चुनाव की व्यवस्था नहीं है वह संस्थान अवश्य अच्छा कार्य कर रहे हैं।

अतः सरकार का दायित्व है कि इस अव्यवस्था व अराजकता को दूर करके एक अच्छा वातावरण शिक्षण संस्थाओं में स्थापित करे जो पिछले अनेक वर्षों से बिगड़ा हुआ है। जिससे शिक्षा हमारी परंपरा, संस्कृति वह देश की उन्नति से जुड़ सके।

आज का प्रश्न

- आचार्य धर्मपाल, कुरुक्षेत्र

प्रश्नः- क्या हमें सभी का आदर सत्कार करना चाहिए ?

उत्तरः- छह प्रकार के लोगों का आदर सत्कार ना करे-

१. जो वेदों की निंदा करता हो।

२. जो सर्वथा वेद विरुद्ध कर्म करता हो।

३. बिल्ली के समान छिपकर और स्थिर रहकर झट से चूहे को मार अपना पेट भरने वाला।

४. हठी दुराग्रही अभिमानी, आप जाने नहीं दूसरों की माने नहीं।

५. कुतर्की बकने वाला

६. बगुले के समान दिखावटी ध्यान मग्न होकर झट से मछली पकड़ के मार कर अपना स्वार्थसिद्ध करने वाले का सामान्य व्यवहार छोड़कर आदर सत्कार कभी ना करें।

उपरोक्त व्यक्तियों को सम्मान देकर उनका अहित करना होता है सम्मान न देने का तात्पर्य अपमान करना नहीं है बस उसे महत्व ना दें, ऐसा करने से उसका बहुत बड़ा हित होगा क्योंकि यदि उपरोक्त प्रकार के व्यक्तियों का आदर सम्मान समाज में बढ़ेगा तो वे अपना सुधार कदापि ना कर पाएंगे यदि हम इस प्रकार के व्यक्तियों का सम्मान नहीं करेंगे तो यह सम्मान की लालसा में अपना बहुत सा सुधार करके समाज के लिए आदर्श बनेंगे।

गृहस्थ सम्बन्ध : भाग-६

-आचार्य संजीव आर्य, मु०नगर,

आधुनिक और मनमानी व्यवस्थाओं और सिद्धान्तों ने मानव जगत को किंचित दिखाई पडने वाले सुख के प्रतिफल में अनेकों दुःख व उलझने दी हैं। जिससे हमारा जीवन दुःख और दुःख के विशेष साधनों से भर गया है। मालाओं पर मालाएं चढाने की हमारी वृत्ति ने समाज के अधिकांश भाग को तर्कहीन, मूर्ख बना दिया है। वधू-वर एक-दूसरे के शत्रु बनकर गृहस्थ में रह रहे हैं **'तामद्यगाथां गास्यामि या स्त्रीणामुत्तमं यशः।'** और **'प्र मे पतियानः पन्थाः।'** की भावना व आदर्श कहां चला गया? कहां चले गये वो पूर्वजों के पथगामी जो उन पथों पर चल सकें जिन पर आज भी पुण्य पूर्वजों के पदचिन्ह अभी तक मिटे नहीं हैं। जहां सीता व राम का अमिट प्रेम परस्पर का विश्वास इतिहास के शिखर पर चमक रहा है, लक्ष्मण व उर्मिला का प्रेम व विश्वास युगों के बीतने के बाद भी अभी तक ताजा है, रुक्मणी व श्रीकृष्ण का वैवाहिक प्रेमपूर्ण ब्रह्मचर्य चर्चा का विषय भले न हो पर इतिहास के पृष्ठ उसके अवश्य ही साक्षी हैं। यदि सुदूर ऐतिह्य प्रमाणों में न भी जाना चाहें तो अपने निकटवर्ती दादी-दादा, नानी-नाना, माता-पितादिकों का अमूर्त, अनभिव्यक्त प्रेम बुद्धिमान सन्तानों से छिपा नहीं रहता। वस्तुतः स्त्री के प्रति प्रेम उसके सम्मान से ही उपजता है, स्त्री शक्ति स्वरुपा प्रकृति जैसी ही है। प्रकृति का सम्मान नहीं करने का परिणाम हम सबके सामने है, सम्पूर्ण संसार से भी वह कार्य सम्भव नहीं जो प्रकृति से सम्भव है। तदैव ही स्त्री है, वह पत्नी, पुत्री, बहन या मातादि जिस भी रुप में हमें प्राप्त हो सम्मान के योग्या है। आप सम्मान सहित व्यवहार आरम्भ कीजिए वह कब प्रेम में बदल जायेगा, पता भी न चलेगा। फिर मेरा सम्मान तेरा सम्मान, मेरा अहं तेरा अहं, मेरी उन्नति तेरी उन्नति का भेद भी न रहेगा। कब मेरा तेरा हो गया कब तेरा मेरा हो गया अनुभव ही न होगा। पत्नी की उन्नति मे पति को अपनी उन्नति दिखेगी और पति की उन्नति में पत्नी को। पुनः कहां शत्रुता का स्थान शेष रहता है। पवित्र यज्ञाग्नि की प्रदक्षिणा करते हुवे वर मानो यही कह रहा है कि हे ईश्वर! यह देवी सूर्य के समान शोभायुक्त होवे और इससे मैं भी शोभित हो जाऊँ। जब हम दोनों पत्नीव्रत व पतिव्रता का पालन करेंगें तब हम जल के दो प्रवाहों की भांति शक्तिशाली होकर जीवन की सब विघ्न-बाधाओं को बहा ले जायेंगें।

बाधाएं अनेक प्रकार की हैं जहां बाहर संसार के साथ व्यवहार से अनेकों समस्याएं खड़ी होती हैं वहीं हमारे अपने भीतर के विचार भी नित नई बाधाओं को उत्पन्न करते हैं। सबका समाधान करना होगा, सबसे लडना होगा ये सब जीवन के अंग ही हैं। एक सावधानी सदैव रहे जैसे शरीर का सबसे उत्तम रक्षण ईश्वर द्वारा प्रदत्त प्रतिरक्षा प्रणाली से ही संभव है वैसे ही हमारे जीवन का भी सर्वोत्तम संचालन ईश्वरीय प्रणाली से ही संभव है। उसी के अनुसार हमारे यहाँ विवाह संस्कार होता है। विवाह में अधिकांश मन्त्र पति बोलता है जिसको देखकर कई बार प्रश्न उठता है कि वधू से तो कुछ बुलवाया ही नहीं या बहुत ही कम बुलवाया है? मित्रता की घोषणा के पश्चात भी बराबरी के समर्थक कह देते हैं कि यह तो बराबरी वाली बात नहीं हुई, किन्तु इस भाव को जाने बिना यह बात समझ में नहीं आ सकती कि पति मित्र तो है ही परन्तु वह पत्नी का दीक्षागुरु भी है। क्योंकि उसी ने अभी- अभी गृहस्थ धर्म की दीक्षा दी है और जीवन भर मार्गदर्शन का प्रण भी लिया है। इससे जहाँ यह बात आती है कि दम्पत्ती गुरु शिष्य भाव से वर्ते वहीं यह भी समझना चाहिए कि पति को योग्य भी, अपितु योग्य ही होना चाहिए। कम से कम वह गृहस्थ धर्म को अच्छे से जानता हो यह अत्यन्त आवश्यक है। जो बाहर और भीतर से उत्पन्न होने वाली बाधाएं हैं उनके कारण के सम्बन्ध में बडी महत्वपूर्ण शिक्षा यहाँ दी है। इन बाधाओं का मूल कारण है द्वेष की भावना और द्वेष के साथ राग का जोड़ा है, दोनों परस्पर सम्बद्ध हैं। जहाँ राग अधिक होगा वहाँ द्वेष की भी उतनी ही संभावना बनी रहेगी। इसी को ईश्वरीय आदेशानुरूप पति कहता है- **'वयं धारा उदन्या इवातिगाहेमहि द्विषः।'** अर्थात् जैसे जल की उमड़ती हुई धाराएं अपने मार्ग में आने वाली बाधाओं को बहा ले जाती हैं वैसे ही हम अपने इस गृहस्थ से इस द्वेष भावना को दूर-अतिदूर कर दें। ये भावना दूर रही तो सुख की कमी न होगी और यदि यह दूर न हो पायी तो दुःख का सबसे बड़ा साधन तो है ही।

ब्रह्मचर्य काल में वधू-वर दोनों परमात्मा के बनाए और ऋषि-मुनियों के पालन किए हुए नियमों से बंधे थे। अनेक प्रतिबंध माता पिता व समाज ने लगा रखे थे। भोजन, वस्त्र, शयन और उत्थान आदि सब अर्थात् पूरी दिनचर्या बंधी थी। ब्रह्मचर्य काल में एक तपश्चर्या युक्त जीवन था। अब विवाह से वह प्रतिबंध हट रहे हैं। अब स्वतन्त्रता होगी भोजन की, उत्तम रुचियुक्त वस्त्रों के धारण की, शयन की उत्थान की, एक दूसरे को आकर्षित कर प्रेमपाश में डालने की और हो भी क्यों न, यह गृहस्थ तो है ही लोकारिष्ट अर्थात् संसार में अभिष्ट प्राप्त करने के लिए। परन्तु गृहस्थों को स्मरण रखना चाहिए कि गृहस्थ का यह मार्ग भले ही संसार के सुखों की प्राप्ति के लिए है लेकिन यह सुखसिद्धि सार्वकालिक और सार्वभौमिक वेदानुकूल नियमों को छोडकर, सुकर्मों का त्याग करके नहीं हो सकती। भोजन की स्वतन्त्रता है किन्तु मांसाहार और शराब आदि व्यसनों की किंचित मात्र भी अनुमति नहीं दी जा सकती। शयन का समय अध्ययन काल जैसा बंधा नहीं है, उठने के समय में भी वैसी कठोरता नहीं रहेगी किन्तु पूरी रात व्यर्थ के कामों में जागकर सूर्योदय के पश्चात देर तक सोते रहकर व्यवहार के नाश की अनुमति नहीं मिलनी चाहिए। वास्तव में यह समय ब्रह्मचर्य काल में सीखे अनुशासन को सुखपूर्वक जीवन में धारण करने का है। अब तक जो अनुशासन सीखा वह स्वभाव में धारण हो चुका, उसे छोडना नहीं है, वही सुख का साधन बनेगा।

क्रमशः .....

व्यवहारभानुः - आचरण की शिक्षा के लिए ऋषि का श्रेष्ठ ग्रन्थ

ऋषि दयानन्द ने वेद के सिद्धान्तों को जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए अन्य कार्यों के साथ-साथ एक पूर्णकालिक लेखक के रूप में भी अनेकों ग्रन्थों की रचना की है। उन्होंने विशुद्ध व्याकरण के ग्रन्थों से लेकर वेदभाष्य तक व सत्यार्थ प्रकाश जैसे कालजयी ग्रन्थ से लेकर सामान्य सिद्धान्त अनुरूप व्यवहार के लिए व्यवहारभानु जैसी सामान्य जन के लिए भी अत्यन्त उपयोगी पुस्तकों की रचना की है। ऋषि का एक-एक शब्द व पंक्ति व्यक्ति के लिए अमूल्य प्रेरणा का स्रोत है। आइए उनकी व्यवहारभानुः पुस्तक के स्वाध्याय द्वारा वैदिक सिद्धान्तों के परिपालन की दिशा में आगे बढ़कर अपने-अपने आचरण को वेदानुकुल बनाएं और ऋषि के ही शब्दों के अनुरूप- **''अपने तथा अपने-अपने सन्तान तथा विद्यार्थियों का आचार अत्युत्तम करें, कि जिससे आप और वे सब दिन सुखी रहें।''**

यहाँ प्रस्तुत है व्यवहारभानुः पुस्तक, आईये इसका स्वाध्याय करते हैं। ध्यान से पढ़ें तथा विचार करें कि यदि हम ऋषि के बताए अनुसार व्यवहार करते हैं तो हम कितना अपना व दूसरों का हित कर सकते हैं और समाज में व्याप्त अनेक प्रकार के दुर्व्यवहारों से न केवल स्वयं बच सकते हैं अपितु अपनी सन्तानों तथा शिष्यों को भी बचा सकते हैं।

(प्र०) '**प्रजा**' किसको कहते हैं?

(उ०) जैसे पुत्रादि तन-मन-धन से अपने माता-पितादि की सेवा करके उनको सर्वदा प्रसन्न रखते हैं, वैस प्रजा अनेक प्रकार के धर्मयुक्त व्यवहारों से पदार्थों को सिद्ध करके राजसभा को कर देकर उनको सदा प्रसन्न रक्खे, वह '**प्रजा**' कहाती है।

और जो अपना हित और प्रजा का अहित करना चाहे वह न राजा और जो अपना हित और राजा का अहित चाहे, वह प्रजा भी नहीं है, किन्तु उनको एक-दूसरे का शत्रु, डाकू, चोर समझना चाहिये। क्योंकि दोनों धार्मिक होके एक-दूसरे का हित करने में नित्य प्रवर्त्तमान हों, तभी उनकी और **राजा** और **प्रजा** संज्ञा होती है, विपरीत की नहीं। जैसे -

[अन्धेर नगरी और गवर्गण्ड राजा का दृष्टान्त]

अन्धेर नगरी गवर्गण्ड राजा ।
टके सेर भाजी टके सेर खाजा॥

एक बड़ा धार्मिक, विद्वान् सभाध्यक्ष राजा यथावत् राजनीति से युक्त होकर प्रजापालनादि उचित समय में ठीक-ठीक करता था। उसकी नगरी का नाम **प्रकाशवती**, राजा का नाम **धर्मपाल** और व्यवस्था का नाम '**यथायोग्य करने हारी**' था। वह तो मर गया। पश्चात् उसका लड़का, जो महा अधर्मी मूर्ख था, उसने गद्दी पर बैठके सभा से कहा कि-"जो मेरी आज्ञा माने वह मेरे पास रहे। और जो न माने, वह यहाँ से निकल जाये।" तब बड़े-बड़े धार्मिक सभासद् बोले कि-"जैसे आपके पिता सभा की सम्मति के अनुकूल वर्त्तते थे, वैसे आपको भी वर्त्तना चाहिए।"

राजा-उनका काम उनके साथ गया। अब मेरी जैसी इच्छा होगी, वैसा करूँगा। **सभा**-जो आप सभा का कहा न करेंगे तो राज्य का नाश अथवा आपका ही नाश हो जायेगा। **राजा**-मेरा तो जब होगा, तब होगा, परन्तु तुम यहाँ से चले जाओ। नहीं तो तुम्हारा नाश मैं अभी कर दूँगा। सभासदों ने कहा कि '**विनाशकाले विपरीतबुद्धिः**' जिसका शीघ्र नाश होना होता है, उसकी बुद्धि पहले ही से विपरीत हो जाती है। चलिये, यहाँ अपना निर्वाह न होगा। वे चले गये और महामूर्ख, धूर्त्त खुशामदी लोगों की मण्डली उसके साथ हो गई।

राजा ने कहा कि-"आज से मेरा नाम **"गवर्गण्ड"**, नगरी का नाम **"अन्धेर"** और जो-जो मेरे पिता और सभा करती थी, उसमें सब काम मैं उल्टा ही करूँगा। जैसे मेरा पिता और सभासद् रात में सोते और दिन में राजकार्य करते थे, वैसे ही विपरीत हम लोग दिन में सोवेंगे और रात में राजकार्य करेंगे। उनके सामने उनके राज्य में सब चीजें अपने-अपने भाव पर बिकती थीं, हमारे राज्य में केशर, कस्तूरी से लेकर मिट्टी पर्यन्त सब चीज़ एक टके सेर बिकेंगी।

जब ऐसी प्रसिद्धि देश-देशान्तरों में हुई तब किसी स्थान में दो गुरु-शिष्य वैरागी अखाड़ों में मल्लविद्या करते, पाँच-पाँच सेर खाते और बड़े मोटे थे। चेले ने गुरु से कहा कि-"चलिए अन्धेर नगरी में। वहाँ दस (१०) टकों से दस सेर मलाई आदि माल चाबके खूब तैयार होंगे।" गुरु ने कहा कि-"वहाँ गवर्गण्ड के राज्य में कभी न जाना चाहिये, क्योंकि किसी दिन खाया-पिया सारा निकल जावेगा, वरन् प्राण भी बचाना कठिन होगा।"। फिर जब चेले ने हठ किया, तब गुरु भी मोह से, साथ चला गया। वहाँ जाके अन्धेर नगरी के समीप बगीचे में निवास किया, और खूब माल चाबते और कुश्ती किया करते थे।

इतने में कभी एक आधी रात में किसी साहूकार का नौकर एक हज़ार रुपयों की थैली लेके किसी साहूकार की दुकान पर जमा करने को जाता था। बीच में उचक्के ने आकर रुपयों की थैली छीनकर भागे। उसने जब पुकारा तब थाने के सिपाहियों ने आकर पूछा कि क्या है? उसने कहा कि-अभी उचक्के मुझ से रुपयों को छीनकर इधर भागे हैं। सिपाही धीरे-धीरे चलके किसी भले आदमी को पकड़ लाये कि तू ही चोर है। उसने कहा कि-मैं फलाने साहूकार का नौकर हूँ, चलो पूछ लो। **सिपाही**-हम नहीं पूछते, चल राजा के पास, पकड़कर राजा के पास ले जाकर कहा कि इसने हज़ार रुपयों की थैली चोर ली है।

-क्रमशः ....

संध्या काल

माघ-मास, शिशिर-ऋतु, कलि-5120, वि. 2076	**माघ-मास, शिशिर-ऋतु, कलि-5120, वि. 2076**
(11 जनवरी 2019 से 9 फरवरी 2020)	**(10 फरवरी 2019 से 9 मार्च 2020)**
प्रातः कालः 6 बजकर 30 मिनट से (6.30 A.M.)	**प्रातः कालः 6 बजकर 15 मिनट से (6.15 A.M.)**
सांय कालः 6 बजकर 00 मिनट से (6.00 P.M.)	**सांय कालः 6 बजकर 15 मिनट से (6.15 P.M.)**

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आयोजित दो दिवसीय सत्रों व सभा से सम्बन्धित नवीन जानकारी सभा की बेवसाईट–

www.aryanirmatrisabha.com

पर उपलब्ध है। अत: आप वहाँ से जानकारी ले सकते हैं। यह पत्रिका भी प्रत्येक मास दिनांक 10 को सभा की बेवसाईट पर डाल दी जाती है अत: पत्रिका को पढ़ने के लिए साईट के लिंक

www.aryanirmatrisabha.com/हिन्दी में पत्रिका

पर जाएं।

11 जनवरी–9 फरवरी–2020 **माघ** ऋतु– शिशिर

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
सुभाष जयन्ती 23 जनवरी					पुनर्वसु कृष्ण प्रतिपदा 11 जनवरी	पुष्य कृष्ण द्वितीया 12 जनवरी
आश्लेषा कृष्ण तृतीया 13 जनवरी	मघा/पू॰ फाल्गुनी कृष्ण चतुर्थी 14 जनवरी	उ॰ फाल्गुनी कृष्ण पंचमी 15 जनवरी	हस्त कृष्ण षष्ठी 16 जनवरी	चित्रा कृष्ण सप्तमी/अष्टमी 17 जनवरी	स्वाती कृष्ण नवमी 18 जनवरी	विशाखा कृष्ण दशमी 19 जनवरी
अनुराधा कृष्ण एकादशी 20 जनवरी	ज्येष्ठा कृष्ण द्वादशी 21 जनवरी	मूल कृष्ण त्रयोदशी 22 जनवरी	पूर्वाषाढ़ा कृष्ण चतुर्दशी 23 जनवरी	उत्तराषाढ़ा कृष्ण अमावस्या 24 जनवरी	श्रवण कृष्ण प्रतिपदा 25 जनवरी	धनिष्ठा शुक्ल द्वितीया 26 जनवरी
शतभिषा शुक्ल तृतीया 27 जनवरी	शतभिषा शुक्ल तृतीया 28 जनवरी	पूर्वाभाद्रपदा शुक्ल चतुर्थी 29 जनवरी	उत्तराभाद्रपदा शुक्ल पंचमी 30 जनवरी	रेवती शुक्ल षष्ठी 31 जनवरी	अश्विनी शुक्ल सप्तमी 1 फरवरी	भरणी शुक्ल अष्टमी 2 फरवरी
कृतिका शुक्ल नवमी 3 फरवरी	रोहिणी शुक्ल दशमी 4 फरवरी	मृगशिरा शुक्ल एकादशी 5 फरवरी	आर्द्रा शुक्ल द्वादशी 6 फरवरी	पुनर्वसु शुक्ल त्रयोदशी 7 फरवरी	पुष्य शुक्ल चतुर्दशी 8 फरवरी	आश्लेषा शुक्ल पूर्णिमा 9 फरवरी

10 फरवरी–9 मार्च–2020 **फाल्गुन** ऋतु– वसन्त

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
मघा कृष्ण प्रतिपदा/द्वितीया 10 फरवरी	पू॰ फाल्गुनी कृष्ण तृतीया 11 फरवरी	उ॰ फाल्गुनी कृष्ण चतुर्थी 12 फरवरी	हस्त कृष्ण पंचमी 13 फरवरी	चित्रा/स्वाती कृष्ण षष्ठी 14 फरवरी	विशाखा कृष्ण सप्तमी 15 फरवरी	अनुराधा कृष्ण अष्टमी 16 फरवरी
ज्येष्ठा कृष्ण नवमी 17 फरवरी	मूल कृष्ण दशमी 18 फरवरी	पूर्वाषाढ़ा कृष्ण एकादशी 19 फरवरी	पूर्वाषाढ़ा कृष्ण द्वादशी 20 फरवरी	उत्तराषाढ़ा कृष्ण त्रयोदशी 21 फरवरी	श्रवण कृष्ण चतुर्दशी 22 फरवरी	धनिष्ठा कृष्ण अमावस्या 23 फरवरी
शतभिषा शुक्ल प्रतिपदा 24 फरवरी	पूर्वाभाद्रपदा शुक्ल द्वितीया 25 फरवरी	उत्तराभाद्रपदा शुक्ल तृतीया 26 फरवरी	रेवती शुक्ल चतुर्थी 27 फरवरी	अश्विनी शुक्ल पंचमी 28 फरवरी	भरणी शुक्ल पंचमी 29 फरवरी	कृतिका शुक्ल षष्ठी 1 मार्च
कृतिका शुक्ल सप्तमी 2 मार्च	रोहिणी शुक्ल अष्टमी 3 मार्च	मृगशिरा शुक्ल नवमी 4 मार्च	आर्द्रा शुक्ल दशमी 5 मार्च	पुनर्वसु शुक्ल एकादशी 6 मार्च	पुष्य शुक्ल द्वादशी/त्रयोदशी 7 मार्च	आश्लेषा/मघा शुक्ल चतुर्दशी 8 मार्च
पू॰ फाल्गुनी शुक्ल पूर्णिमा 9 मार्च						

Rishi Dayanand - His Life And Work

-Saroj Arya, Delhi

"I don't attempt to hew down the more thorny trees with a nail-cutter, I use the axe," was Swamiji's calm remark.Some admirers of Swamiji came at the time of parting and remarked:

"It is unsafe for you to go to Jodhpur. The people of that State are mean and unscrupulous. They might as well use my fingers for candles and yet not deter me from the performance of my duty," was Swamiji's stern reply.

Swamiji was at Jodhpur on 29th May 1883. A prince had come to receive him and he took him to the bungalow of Mian Faizullah Khan - the Prime Minister of the state, where he was to put up.

All was not well with the state of Jodhpur. Corruption and robbery were the order of the day. The ruler, Maharaja Jaswant Singh, a victim of his evil ways, was under the influence of an infamous mistress-Nanhi Jan, and her voice was supreme in the affairs of the State. The Prince had no time from his enjoyments and left the entire administration in the hands of Faizullah Khan, who along with his co-religionists was exploiting the state to his heart's content, while the Rajputs-the ruler's own kinsmen watched helplessly. The Maharaja hardly deserved the name of Rajput, and was an unworthy heir of a glorious race.

It was after 15 days of his arrival that the Maharaja paid him a visit. Swamiji began a talk on the 'Duties of Kings' which lasted for three hours. At his suggestion, Swamiji began a series of lectures to be held every day from 4 P.M. to 6 P.M. During the course of these lectures, he was very unsparing in his exposure of wickedness, and jobbery in the State. The Mussalmans of the State were excited beyond measure at his severe criticism of the muslim creed. No wonder that one day Faizullah Khan, audaciously enough, threatened Swamiji. "If it were so I would set two Rajputs at your heels," was Swamiji's cool reply. One day a muslim youth with his hands on the handle of his sword interrupted Swamiji in his lecture saying, "Hold your tongue, and criticize not our faith or else I will end your life with this sword."

"Peace, boy! peace! you are hardly out of your teens yet, I wonder if you know how to wield your sword or even unsheathe it. If I were to feel afraid of such idle threats, I would have given up my work long-long ago." The rebuff worked, the boy almost collapsed with shame.

More troublous developments were ahead. One of Swamiji's visits to the royal palace was at an unexpected hour, when Nanhi Jan was sitting with the Maharaja. Coming to know that the Swami was at the gates of the palace he ordered the attendants to take the woman away. Finding the band of carriers short of one man, the Maharaja himself put his hand to the palanquin in steady it. But lo! the Swami was there. Indignant at what he saw going on, he exclaimed:

To be continued...

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

यह सत्र बहुत अच्छा था हमें इसमें सभी प्रकार के मान्यता के विषय में पता चला और किस मत का हम अपने जीवन में अनुसरण करने करें, की प्रेरणा मिली। हम सभी अनेक जातियों में बंटे हुए थे उन सब का हमें पता चला और हमारे देश को किस प्रकार बांटने का कार्य किया है उसके बारे में पता चला। हमारे देश के नाम को बदलकर जातियों में जो बांटा गया है, उसके बारे में हमें पता चला और सबसे बड़ी बात ईश्वर का वास्तविक रूप क्या है और उनकी उपासना कैसे करना है उसके विषय में हमें आचार्य जी ने भली-भांति समझाने का प्रयास किया। अब हम किसी ढ़ोगी-पाखंडी के चक्कर में नहीं आयेंगे।

अब से हम प्रशिक्षण लेकर के और आर्य के विषय में भलीभांति जानकर आर्य निर्मात्री सभा का प्रचार-प्रसार करेगें और सत्र में भाग लेंगे।

नाम : हरिराम आर्य, आयु : 23 वर्ष, योग्यता : स्नातक, कार्यः योग शिक्षक, पता : जैसपुरी, छत्तीसगढ़।

इस आर्य निर्माण शिविर में आने से मुझे बहुत सारी बातों का पता चला जैसे आर्य का मतलब, ईश्वर, आत्मा, ऐसी बहुत सारी बातों का ज्ञान प्राप्त हुआ। इस शिविर में आचार्य जी ने हमें ईश्वर कहाँ है वह पता कराया। हमारे यहाँ जो आर्य का मतलब नहीं जानता और जानकर भी जो उपासना नहीं करता उसे नास्तिक कहते हैं और जो आर्य को समझता है और उसकी उपासना करता है उसे आस्तिक कहते हैं। जो आस्तिक होना है वही आर्य होना है। आर्य खुद नहीं बनता उसे कैसे बनाना है ऐसी बहुत सारी बातें मुझे आचार्य जी ने उदाहरण तथा कथा के माध्यम से समझाया है। मुझे दोनों दिन शिविर में आकर बहुत सारी बातों का ज्ञान प्राप्त हुआ।

आपके आदेशनुसार हम अपने यहाँ आर्य निर्माण में सहयोग करेंगे। हम अपने निलंगा में ज्यादा से ज्यादा लोगों में आर्य निर्माण करने का प्रयास करेंगे।

नाम : शीतल, आयु : 21 वर्ष, योग्यता : बी.एस.सी., कार्यः शिक्षण, पता : लातूर, महाराष्ट्र।

आर्य निर्माण शिविर में मेरी बहुत सी शंका का समाधान हुआ। जैसे जीवन में मुख्य क्या है? जीवन में धर्म का सत्य स्वरूप ईश्वर, जीव आदि तत्व का यथार्थ ज्ञान प्राप्त हुआ और हमें पहले आर्य बनना पड़ेगा फिर उनके सिद्धान्त आदि का ज्ञान हुआ। हमें दो दिन कैसे बीत गये मालूम ही नहीं हुआ। उत्तम गुणों को धारण करना, दुर्व्यसनों से दूर रहना, सदाचार आदि को समझा। इतिहास, रामायाण, महाभारत के प्रसंगों से हमें ज्ञान प्राप्त हुआ। हमारा देश के प्रति प्रेम, युगनिर्माण कैसे करना, हमारा धर्म क्या? मुख्य उद्देश्य को करते हुये सुख को कैसे प्राप्त करें? अष्टांगयोग और वेद का सिद्धान्त, आस्तिक बनकर ही हम आर्य बन सकते हैं। आप दोनों आचार्यों को मेरा प्रणाम। आपके समझाने का सरल, सादी भाषा, तर्क-वितर्क, विचार करने से प्रश्नों का उत्तर मिला। हम विचार, विवेक द्वारा सत्य तत्व समझे।

नाम : सुभाष, आयु : 74 वर्ष, योग्यता : 12, कार्यः बर्तन व्यापार, पता : सोलापूर, महाराष्ट्र।

मुझे सत्र से अपने धर्म और ईश्वर की सत्यता को जानने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, मैं अपने आप को सौभाग्यशाली समझता हूँ कि मैं इस सत्र का हिस्सा बना। अपने धर्म और जीवन जीने का सही वैदिक नीति जाना। हमने जाना कि हमारे पूर्वज आर्य थे और हम भी आर्य हैं, और हमें अपने आर्यावर्त्त का निर्माण करना है। हम केवल आर्य है। जय आर्यावर्त्त

मैं एक आर्य हूँ और मैं अपने आर्य प्रतिष्ठा के लिए इसे सम्पूर्ण भारत वर्ष बनाये रखने और भारत को पुनः आर्यावर्त्त बनाने में अपना सर्वस्व अर्पित कर दूंगा।

नाम : विरेन्द्र कुमार, आयु : 23 वर्ष, योग्यता : बी.एस.सी, कार्यः मजदूरी, पता : दुर्ग, छत्तीसगढ़।

सत्र बहुत ही अच्छा लगा। सभी सत्य-सत्य की जानकारी मिली। ईश्वर के बारे में जो भ्रम था वह दूर हो गया। हमें अपने बारे में जानने को मिला कि हम कौन हैं? और हमें क्या करना चाहिए? इस सत्र के माध्यम से हमें अपने राष्ट्र के बारे में भी जानकारी मिली कि हम किस दिशा कि ओर जा रहे हैं। आर्य सिर्फ लिखने से आर्य नहीं होता कर्म से होता हैं। हम भी आर्या बनना चाहती हैं। हमें बहुत प्रेरणा मिली। इस सत्र से हमें कैसा जीवन जीना चाहिए वह पता चला। परिवार को आर्य बनाना चाहती हूँ और समाज को आर्य/आर्या बनाने में मदद करूंगी।

नाम : दुर्गा, आयु : 26 वर्ष, योग्यता : बी.ए., कार्यः विद्यार्थी, पता : कबीरधाम, छत्तीसगढ़।

मुझे थोड़ी बहुत जानकारी पहले इसके बारे में सत्यार्थ प्रकाश पुस्तक से थी, मुझे सत्र बहुत ही अच्छा लगा। मुझे आर्य के बारे में पूरी जानकारी हासिल हुई। मुझे अपने वास्तविक अस्तिव का पता चला। मेरी हार्दिक इच्छा है कि इस प्रकार के सत्र बिहार, झारखण्ड, राजस्थान और अन्य स्थान पर होना चाहिए। ऐसा मेरा मानना है ताकि लोग राष्ट्र की रक्षा कर सकें और अपने देश के गौरव को पहचान पायें।

आपका मार्गदर्शन चाहूँगा क्या और सत्र मैं झारखण्ड में करा सकता हूँ।

नाम : चंदन कुमार कर्णवाल, आयु : 22 वर्ष, योग्यता : सिविल इंजीनियरिंग, कार्यः जे.ई. इन पी.डब्लू.डी., पता : जमशेदपुर, झारखण्ड़।

आओ यज्ञ करें!

पूर्णिमा	10 जनवरी	दिन-शुक्रवार	मास-पौष	ऋतु-शिशिर	नक्षत्र-आर्द्रा
अमावस्या	24 जनवरी	दिन-शुक्रवार	मास-माघ	ऋतु-शिशिर	नक्षत्र-उत्तराषाढ़ा
पूर्णिमा	09 फरवरी	दिन-रविवार	मास-माघ	ऋतु-शिशिर	नक्षत्र-आश्लेषा
अमावस्या	23 फरवरी	दिन-रविवार	मास-फाल्गुन	ऋतु-वसन्त	नक्षत्र-धनिष्ठा

आर्य निर्माणशाला में विभिन्न स्थानों पर निर्मात्री सभा के आचार्यों द्वारा आर्य व आर्या निर्माण

स्वामी व प्रकाशक आचार्य हनुमत्प्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।